

### (3) सूखा (Drought)

वायुमण्डल पर सप्ताह या इससे अधिक समय तक या वर्षा के प्रभाव से वायुमण्डली संकट उत्पन्न होते हैं। जैसे बाढ़ का आना। बाढ़ का पानी अधिक समय तक भरा रहने से अन्य रोगों को जन्म देता है। बाढ़ से तथा सूखे से फसलें, वनस्पति आदि भी नष्ट हो जाती हैं तथा प्रदूषण फैल जाता है। जीव जन्तुओं के सड़ने से महामारी फैल जाती हैं।

♦ सूखा प्रकोप (Drought Hazards)—सूख भी बहुत धातक प्राकृतिक आपदा है। पानी (वर्षा) की अत्यधिकता के कारण सूखा प्राकृतिक वनस्पति, कृषि तथा जीव जन्तुओं पर अपना प्रभाव दिखाता है। पानी के अभाव में पशु-पक्षी प्राण त्याग देते हैं। अतः जल जीवन-रूप के अस्तित्व के लिए तीन वस्तुओं—जल, वायु तथा आहार (भोजन) में से एक है। कहा गया है—जल ही जीवन है (Water is Life)।

इन सभी का एक-दूसरे से सीधा सम्बन्ध है। जे०ई० होब्स (J.E. Hobbs) ने सूखे के बारे में इस प्रकार कहा है—

"The most of the common view of drought is of rain fall deficiency, but the links between rainfall and water which becomes available to meet the complex set of factors involved to supply that need through the hydrological cycle." (J.E. Hobbs 1980)

अधिकांश सूखा वर्षा की प्रवणता के विचार से जुड़ा है। लेकिन वर्षा तथा पानी जो भी गम्भीर होता है जल चक्र के द्वारा जटिल तत्वों की आवश्यकता की पूर्ति से है। जे०सी० होयट (1936) में सूखे को इस प्रकार परिभाषित किया—“सूखे की दशा उस समय उत्पन्न होती है जब वार्षिक एवं मासिक वर्षा सामान्य वर्षा के 85 प्रतिशत से कम होती है।”

"The condition when the annual and monthly rain fall is less than 85% of normal rainfall is called drought."

सी० जी० वेट्स (1935) ने कहा—“सूखे की स्थिति उस समय उत्पन्न होती है जबकि वार्षिक वर्षा सामान्य वर्षा की 75% या उससे कम तथा मासिक वर्षा सामान्य मासिक की 60 प्रतिशत या उससे कम होती है।”

BRO (British Rainfall Organization) ‘ब्रिटिश वर्षा संगठन’ ने सूखे की इस प्रकार व्याख्या की है—

सूखा तीन प्रकार का होता है—

(अ) निरपेक्ष सूखा (Absolute Drought)—जब लगातार कम से कम 15 दिनों तक प्रति दिन 0.01 से कम वर्षा होती है।

(ब) आंशिक सूखा (Partial Drought)—जब कम से कम 29 दिनों तक लगातार औसत वर्षा 0.01 इंच या उससे अधिक हो तथा

(स) शुष्क दौर (Dry Spell)—जबकि 15 दिनों तक दैनिक वर्षा 0.04 इंच से कम हो।

वी०ए० कोनार्ड (V.A. Conard, 1944) ने सूखे के विषय में विचार व्यक्त किए—“माह से सितम्बर के बीच जब लगातार 20 दिनों तक दैनिक वर्षा 0.25 इंच से कम होती है तो सूखा उत्पन्न हो जाता है।”

डी०ए० रामदास (1950) में सूखे के बारे में लिखा—

“सूखे के समय एक सप्ताह तक वर्षा सामान्य की आधी या उससे कम होती है।”

ऐ०जे० हैनरी (1960) ने चरम सूखे की भी चर्चा की है—

“सूखे की स्थिति उस समय उत्पन्न होती है जबकि 21 दिनों तक वर्षा सामान्य की 30% या उससे भी कम होती है। यदि 21 दिनों तक प्राप्त होने वाली वर्षा सामान्य वर्षा के 10% से कम होती है तो चरम सूखे (Extreme Drought) की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।”

इस प्रकार उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि जब वर्षा सामान्य से (75% से) कम होती है तो सूखा पड़ जाता है।

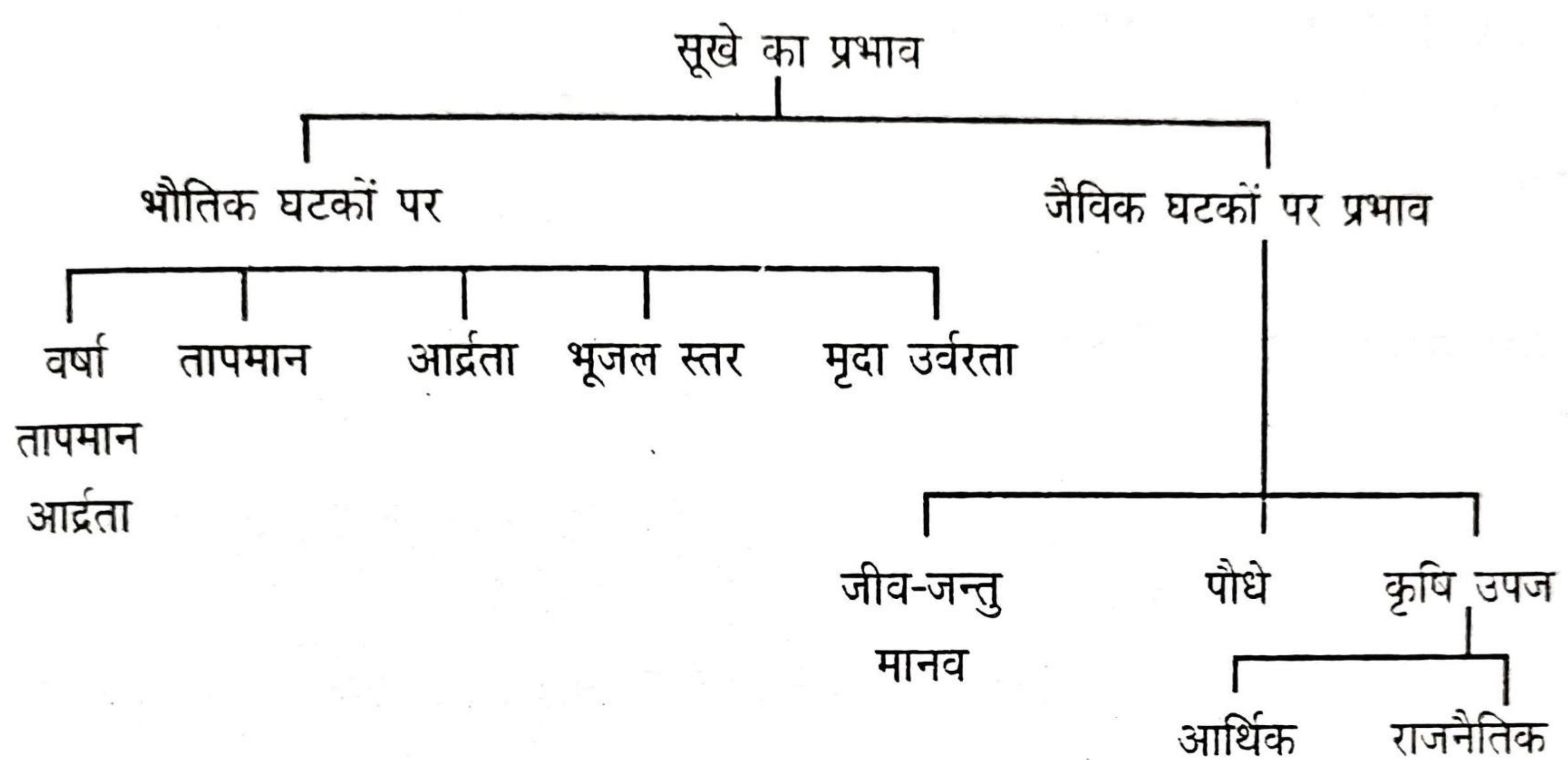
भारतीय जलवायु विज्ञान विभाग के IMD, Indian Meteorological Department के अनुसार सूखा जब कहा जाता है जब किसी भी क्षेत्र में सामान्य वर्षा से वास्तविक वर्षा 75 प्रतिशत से कम होती है। ज्वालामुखी विभाग ने सूखा दो वर्गों में विभक्त किया है—

(अ) प्रचण्ड सूखा (Extreme or Server Drought)—जब वर्षा का अभाव सामान्य वर्षा से (50% से) अधिक हो तथा

(ब) सामान्य सूखा (Average Drought/Normal Drought)—जब वर्षा का अभाव 50 से 25 प्रतिशत के बीच में हो।

अतः सूखा का जन्म जल के अभाव से संचयी प्रभाव से होता है। इस प्राकृतिक प्रकोप के कारण कृषि एवं प्राकृतिक वनस्पति को अत्यधिक क्षति होती है।

सूखे का प्रभाव (Effect of Drought)—वर्षा के अभाव में सूखे का प्रभाव विभिन्न क्षेत्रों में तथा विभिन्न घटकों पर होता है।



इस प्रकार सूखे का जीवमण्डल पारिस्थितिकी तंत्र के सभी स्तर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है क्योंकि जन्तु तथा पौधे मुख्यतः जल पर ही आश्रित रहते हैं। दीर्घकालिक सूखे का प्रभाव तो पारिस्थितिकीय, जनाधिकीय (जनसंख्या), आर्थिक तथा राजनैतिक पक्षों पर पड़ता है।